प्रातः क्लास 4/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे शान्ति में बैठ क्या सोच रहे हैं। यह तो बाप ने समझाया है कि जो कुछ भी इन आँखों से देखते हो, देखते हुए, कर्म करते हुए, यह कर्म है ना। बच्चे बाप को देखते, बाप बच्चों को देखते हैं, देखते हुए नहीं देखते हो; क्योंकि तुम अपन को आत्मा समझते हो। आत्मा को ही देखते हो न कि शरीरों को। आत्मा समझती है अभी यहाँ से जाना है। शान्तिधाम से होकर फिर सुखधाम में जाना है। इन आँखों से जो कुछ तुम देखते हो यह सभी पुरानी तमोप्रधान चीज़ें हैं। आत्मा को तो इन आँखों से देखा नहीं जाता। बाकी जो कुछ देखने में आता है वह सभी विनाश हो जाना है। जैसे पुराने घर में रहते हैं और नया घर बनाने शुरू करते हैं तो बुद्धि में चलते फिरते, खाते–पीते यह याद रहता है कि हम अभी जल्दी ही नये मकान में जावेंगे। नया मकान तैयार होने बाकी 5/6 मास है। जिस दिन से बनना शुरू होता है तो बुद्धि उस तरफ चली जाती है। अभी नया मकान में जाना है। जो बाबा बना रहे हैं। यह पुराना मकान खत्म हो जाना है। यह है बेहद की ख्यालात। यह भी कहते हैं हम नई दुनिया में जाकर बैठेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं नहीं बैठूँगा। तो यहाँ बैठे हुए भी बुद्धि वहाँ लगी रहती है। इस शरीर को देखते हुए जैसे कि नहीं देखते हो। बच्चे जानते हैं यह पुरानी दुनिया है। अपने शरीर सहित यह सभी खलास हो जानी है। बाप भी कहते हैं यह शरीर लोन पर लिया हुआ है। यह भी चले जावेंगे। हम भी चले जावेंगे शान्तिधाम। तो बच्चे भी चले जावेंगे शान्तिधाम। इसलिए बाप कहते हैं शान्तिधाम को याद करो। बाप को याद करो। बाप ही पतित–पावन है, पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाने वाले हैं। श्रीमत देते हैं ना। भल यहाँ बैठे हैं तो भी बुद्धि में बाप और नई दुनिया याद है। जैसे बच्चे कहाँ भी होंगे, बुद्धि में यही याद होगा औरों को भी यह सुनावे। हमारा बाबा नया घर बना रहा है। तुमको भी जो मिलता है उनको यही सुनाते हो बाबा नई सृष्टि स्थापन कर रहे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा श्रीमत देते हैं नई सृष्टि स्थापन करने की। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो यह बन जावेंगे। बच्चे जानते हैं बरोबर यह नई सृष्टि के मालिक थे। सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण.....यह महिमा इन्हों की गाई जाती है। तुम बच्चों को भी ऐसा बनना है। याद करते2 एक तो पावन सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान के गुण यह हैं। सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण ..... यह तो समझते हो ना। भल तुम यहाँ बैठे हो बाबा तरफ देखते हो; परन्तु यह शरीर याद नहीं रहता। भल तुम समझते हो यह परमात्मा का रथ है। आत्माओं का रथ तो सभी है; परन्तु इसमें बाप आकर ट्युशन देते हैं बच्चों को। बहुत ही सहज बात बाप समझाते हैं। समझानी तो बड़ी सीधी मिलती है। भल इन आँखों से देखते हो; परन्तु आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला हुआ है। तुम बच्चे त्रिनेत्री हो। ज्ञान के तीसरे नेत्र से सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हो। यह तीसरा नेत्र सिवाय बाप के और कोई दे न सके। बाकी तो यह सभी बाहर के नेत्र हैं। भल कितने भी बड़े2 सन्यासी पंडित आदि हैं; परन्तु तीसरा नेत्र की ताकत कोई में भी नहीं है। यह तीसरा नेत्र देने लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है। यह बहुत सहज बातें समझने की और समझाने की है। यहाँ तो तुम शान्ति में बैठकर समझते हो। प्रदर्शनी अथवा म्युजियम में शान्ति थोड़े ही रहती है। वहाँ तो बहुत ही आवाज़ हो जाता है। उनको स्कूल नहीं कहा जाता। वह जैसे मेला हो जाता है। तुम समझाते हो तब जबकि वह सेन्टर में कोर्स करने टाइम देते हैं। मेले में इतना समझते नहीं हैं। इसलिए तुम कहते हो एकान्त में आकर के समझना। पढ़ाई की स्कूल भी हमेशा शहर से बाहर होते हैं। तुम बच्चों को सा0 भी किया हुआ है वहाँ भी स्कूल दूर2 होते हैं। हेलीकॉप्टर में जाना पड़ता है। बच्चों ने शुरू में बहुत2 सा0 किये हैं। फिर जो पिछाड़ी में भी रहेंगे वह सा0 करेंगे। वहाँ की भाषा आदि क्या होती है बतलाते थे; क्योंकि यथा राजा रानी तथा भाषा चेंज होती जाती है। तो बच्चों को मुख्य बात तो यह समझनी है बाप को तो जरूर याद करना ही पड़े। बाप कहते हैं बच्चे अभी तुम्हारे लिए नई दुनिया बन रही है। तुम जानते हो नई दुनिया में कोई भी पतित वा आसुरी अवगुण होते ही नहीं। वह है सर्वगुण सम्पन्न..... यहाँ है

अवगुण। वह (देवताएँ) हैं गुणवान। निर्गुण माना कोई गुण नाहीं। मैं निर्गुणहारे में कोई गुण नाहीं। ..... निर्गुण बालक की संस्था भी है। वास्तव में बालक को तो निर्गुण कह न सके। वह तो और ही महात्मा है ..... कोई भी ऐसा नहीं जो उन्हों को समझावे कि यह उल्टा नाम क्यों रखा है। जो बच्चे समझे कि हमारे में ..... गुण नहीं है। समझाने वाला कोई है नहीं। तुम जानते हो हम सभी निर्गुण बालक थे। अर्थात् हमारे में क..... नहीं था। मंदिर में देवताओं के आगे भी जाकर गाते थे हम पापात्मा हैं, कामी, क्रोधी, लोभी हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न..... हैं। हम निर्गुण हैं। बच्चों में तो कोई विकार होते ही नहीं हैं। बड़े होने से फिर ..... का संग लगता है तो कैरेक्टर्स बिगड़ती जाती है। अवगुण आते जाते हैं। शुरू में ही कैरेक्टर्स खराब हो जाते ..... खराब कैरेक्टर्स वाले अच्छे कैरेक्टर्स वालों के आगे माथा टेकते हैं। क्योंकि वह पावन है। खुद पतित हैं। पवित्र(ता) और अपवित्रता में कितना फर्क है। पवित्रता की निशानी भी है। डबल सिरताज। वहाँ कोई ऐसे लाइट का ताज होता ही नहीं। देखने में नहीं आता है। यह तो समझने की बात है। लाइट को प्युरिटी कहा जाता है। ताज देखकर समझा जाता है यह प्युरिटी में है। इम्प्युरिटी वालों को भी ताज है; परन्तु कलियुग में। वह प्युरिटी ..... होते हैं सतयुग में। इम्प्युरिटी का ताज द्वापर से शुरू होता है। फर्स्ट है प्युरिटी। इसलिए बुलाते भी हैं पतित पावन आओ। आकर पावन बनाओ। समझते तो हैं ना कि हम पतित हैं। तो पतित फिर रामराज्य कैसे स्थापन करेंगे। गांधी भी तो गाता था ना पतित–पावन सीता राम..... तो इसको कहा जाता है मिस अन्डर स्टैन्ड। कुछ भी समझते नहीं। मिस अन्डर स्टैन्ड कितने समय तक चलती है। रावण राज्य में जो भी है वह समझते हैं यह अनादि चला आ रहा है। बाप आकर सभी की मिस अन्डरस्टैन्ड दूर करते हैं। अभी तुम बच्चे अपने मिस अन्डरस्टैन्ड कहाँ से आई? शास्त्रों से। जो शास्त्र आदि पढ़ते हैं वही मिस अन्डर स्टैन्ड की बातें सुनाते हैं। सर्वव्यापी कहना और फिर मुख से बोलते हैं कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, पत्थर ठिक्कर सबमें परमात्मा है। कितनी मिस अन्डरस्टैन्ड है। गीता का भगवान श्रीकृष्ण है। कितनी मिस अन्डर स्टैन्ड है। भक्ति माना ही मिस अन्डरस्टैन्ड। जो कुछ सुनाते हैं रांग ही रांग। राइट तो एक को ही कहा जाता है। वही राइट्स ..... हैं। रावण द्वारा अनराइटियस बन जाते हैं। तुम अभी समझते हो द्वापर से लेकर बेसमझ बन पड़े हैं। अगर को.... पूरी रीति नहीं समझते हैं तो समझा जाता है देरी से आया हुआ है। फिर देरी से ही आवेंगे। बाप जो समझाते हैं सभी एकरस नहीं समझते हैं। तुम शुरू से ही पार्ट बजाने आये हो। फिर तुमको ही पहले पार्ट बजाना है। पीछे आने वाले जो धर्म हैं वह सभी पीछे ही आवेंगे। इन बातों को मीठे2 बच्चों नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही तुम जानते हो। यह है बेहद की पढ़ाई जो सिवाय बेहद के बाप के कोई समझा न सके। बाप समझाते भी कितना युक्ति से हैं। जो नम्बरवन पुण्यात्मा अर्थात् पवित्र आत्मा था वही अभी बिल्कुल अपवित्र आत्मा बना है। बाप सिद्ध कर बताते हैं मैं इनमें प्रवेश क्यों करता हूँ; क्योंकि इनको ही फिर फिर नम्बरवन में जाना है। फिर तुम नम्बरवार आवेंगे। जितना जो अच्छा पुरुषार्थ करेंगे। जब घर के नजदीक आवेंगे तो खुशी होगी। स्वर्ग के महल देखने में आते रहेंगे। तुम समझ जावेंगे किसने कितना पुरुषार्थ किया। यहाँ ही मालूम पड़ जाना चाहिए। भल पढ़ाई भविष्य के लिए है; परन्तु पिछाड़ी में बहुतों को सा0 होगा। फिर पछताना पड़ेगा; परन्तु पछताने से पास थोड़े ही हो जावेंगे। पछतावेंगे कि हमने अच्छी रीत पढ़ा नहीं। यह बहुत ही ऊँच पढ़ाई है इसमें पूरा अटेन्शन देना चाहिए। फालतू बातों में कोई फायदा नहीं होता। यह सारी नॉलेज तो तुम यहाँ बैठ पढ़ते हो। यह रथ तो उनका है ना। दोनों इकट्ठे बैठे हैं। यह भी समझते हैं हमारे में शिवबाबा की प्रवेशता है। वह इस तख्त पर बैठे हैं। इसमें और कोई विचार तो नहीं आता है ना। ऊपर से बैठ कैसे पढ़ावेंगे। पढ़ाने लिए मुख तो चाहिए ना। नहीं तो मुख से जो अमृतधारा लेते हैं वह क्या है? गायन भी है अमृत छोड़ विख काहे को खाये। तुम अमृत पीने से देवता बनते हो। विख छुड़ाई जाती है। बाप कहते हैं यह है पढ़ाई। अमृत कोई पीने की चीज़ नहीं है। इस पढ़ाई की महिमा की जाती है। अमृत पीने लिए मनुष्य कितना दूर2 तक जाते हैं। समझते कुछ भी

नहीं हैं। तो इससे सिद्ध होता है बाप जरूर कोई में प्रवेश कर समझाते हैं। मुख रूपी ऑरगन्स बिगर बोलेंगे कैसे? बाप क्लीयर कर समझाते हैं। बाप का यह रथ ही मुकर्रर है। हर 5000 वर्ष बाद इनमें प्रवेश कर तुमको पढ़ाते हैं। हरेक आत्मा का अपना2 रथ अथवा तख्त है। इनको अकाल तख्त कहते हैं। अकाल माना जिसको काल खा न सके। उनका यह चैतन्य तख्त है। आत्मा को काल खा नहीं सकता। वहाँ तो एक तख्त बना रखा है जिसका नाम रख दिया है अकाल तख्त। अकाल भोगा भी कहते हैं। और फिर वह अपना नाम रख देते हैं अकाली। वास्तव में अकाल तो है ही आत्मा। जिसको काल कभी नहीं खाता। वह अपने को अकाली कहते हैं। अकाल तो सभी आत्माएँ हैं। अक्षर तो बड़ा ही अच्छा है; परन्तु अर्थ भी समझना है ना। बाप बच्चों को थोड़ी2 बात बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों खबरदार रहो। तुम्हारा बुद्धियोग सदैव अपने स्वीटहोम से लगा रहे। स्वीटेस्ट होम है ना। स्वीटेस्ट बादशाही भी है। यह भी तुम जानते हो हम कल्प2 आते हैं। बाबा पास क्यों आते हैं? वरसा लेने। क्योंकि सुना हुआ है ना। सत्य ना0 की कथा सुनते हैं। उनमें बहुत कुछ लिखा हुआ है। अभी तुम क्या कर रहे हो। खवैया डूबे हुए को पार करते हैं ना। यह भी गायन है भक्तिमार्ग का। जिसका अर्थ बाप आकर समझाते हैं। शान्तिधाम और सुखधाम को बिल्कुल ही भूल गये हैं; क्योंकि शास्त्रों में बहुत गपोड़े हैं। तुम आसुरी मत पर चल शान्तिधाम–सुखधाम को बिल्कुल ही भूल गये हो। कहते भी हैं भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। और फिर उनके लिए ही कहते हैं कि फलानी को भगाया यह किया। मक्खन चुराया। कितनी वाह्यात बातें लिख दी हैं। संगमयुग पर ही बाप आकर समझाते हैं यह तुम क्या2 कहते रहते हो आठवां गर्भ फिर कहाँ से आया। वह तो फिर भी ठीक नम्बरवार गर्भ हुए। यहाँ तो 6/6 गर्भ में इकट्ठे ही बच्चे पैदा हो जाते हैं। अखबार में समाचार पड़ा था चार बच्चियाँ दो बच्चे 6बच्चे इकट्ठे ही पैदा हुए। तो कुतरी हुई ना। बाप समझाते हैं सतयुग में तो कायदा है एक बच्चा एक बच्ची। वह भी योगबल से होते हैं। वहाँ रावण है नहीं। क्रिमनल आई होती ही नहीं। रावण के आने से ही क्रिमनल आई शुरू होती है। भाई–बहन समझने से भी क्रिमनल आई जाती नहीं। काम महाशत्रु है ना। अभी तुम समझते हो हमारे राज्य में(स्वर्ग में) यह कुछ भी नहीं था। बिल्कुल पवित्र थे। वहाँ तो आयु भी बड़ी होती है। 150 वर्ष की आयु होती है; क्योंकि इस समय योग कमाया है तो वह वरसा पा लिया। तो बाप फिर भी कहते हैं बुद्धि में यह याद रखो हम आत्मा हैं। अभी वापिस अपने घर जाना है। यह 5000 वर्ष का चक्र है। बीच में कोई को भी वापिस नहीं जाना है। न कोई मोक्ष को पाते हैं। यह तो बना बनाया ड्रामा का चक्र है ना। उनसे कोई भी निकल नहीं सकते। वह सन्यासी ब्रह्मज्ञानी। तत्वज्ञानी। तत्व और ब्रह्म को ही ईश्वर कहते हैं। कितने मिसअन्डरस्टैन्ड है। एक मिसअन्डरस्टैन्ड के कारण वह कब भी पुण्यात्मा बन नहीं सकते। ब्रह्मा को याद करते हैं; परन्तु ब्रह्म तो हम आत्माओं का घर है। घर को याद करने से पाप थोड़े ही कट सकते। न तो सतोप्रधान ही बन सकते हैं जो फिर वापिस जाये। नहीं। यह है डिटेल की बातें। बाकी वह तो है ही सेकण्ड की बात। बाप को याद करो तो बाप का वरसा है ही। बाप ही स्वर्ग नई दुनिया रचते हैं। क्रियेटर तो चाहिए ना। नई दुनिया क्रियेट करते हैं। वह तो स्वर्ग ही है। अभी तुम जानते हो हम ही थे। फिर अब बनते हैं। यह चक्र का राज़ समझाया जाता है। भारत पर ही खेल बना हुआ है। भारत ही अविनाशी खण्ड है और सबसे बड़ा तीर्थ है। क्योंकि हेविन बनाने वाला बाप आकर सभी की सद्गति करते हैं। इसलिए इनको सबसे ऊँच तीर्थ कहा जाता है। फिर भारत ही हेविन बन जाता है। बाबा ने बहुत बार समझाया है जो मरते हैं तो उनको लिखना चाहिए स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्कवासी था ना। सभी नर्कवासी हैं। स्वर्ग तो सतयुग को कहा जाता है। अभी तो स्वर्ग है नहीं। आओ तो हम बतावें स्वर्ग में कब चलना होता है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सुनती है और आत्मा ही मनुष्य तन धारण कर पार्ट बजाती है। यह नाटक कितने वर्षों का है उनको भी जानना चाहिए ना। तुम ज्ञान सागर बाप द्वारा अभी जानते हो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।